अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
आशीर्वचन	*(vii)*
दो शब्द	*(ix)*
आमुख	*(xi)*
संक्षिप्त शब्द सूची	*(xix)*
प्रथम अध्याय : 'विषय-प्रवेश'	1-29
जैन धर्म और दर्शन की प्राचीनता, महत्ता व परिभाषा-जैन धर्म के तीर्थंकर-अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के समय की धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थिति-महावीर का योगदान-समानता के स्थापक के रूप में, नारी स्वातंत्र्य के उद्घोषक के रूप में, लोक-भाषा-प्रचारक के रूप में-जैन धर्म के प्रमुख तत्त्व एवं आधुनिक युग में इनकी उपादेयता। परम्परा :-परम्परा का महत्त्व, प्राचीन जैन साहित्य-10वीं शताब्दी से 18वीं शती तक का संक्षिप्त परिचय।	
द्वितीय अध्याय : 'आधुनिक हिन्दी जैन साहित्य : पूर्व-पीठिका'	30-79
हिन्दी जैन-साहित्य का प्रारंभ, आदि काल (11वीं शती से 14वीं शती तक) : गद्य, हिन्दी जैन-साहित्य का मध्यकाल (15वीं शती से 17वीं शती तक) : नाममाला, नाटक समय सार, बनारसी विकास, अर्द्ध-कथानक, मोह-विवेक-बुद्धि, मांझा, इस काल का गद्य, परिवर्तन काल (18वीं शती से 19वीं शती तक)।	
तृतीय अध्याय : 'आधुनिक हिन्दी जैन साहित्य : सामान्य परिचय'	80-144
'आधुनिक' शब्द का विवेचन व महत्त्व-विविध क्षेत्र में आधुनिकता के साथ साहित्य में आधुनिकता का पदार्पण-आधुनिक युग 'गद्य-युग' के रूप में-जैन साहित्य में आधुनिक युग का प्रारम्भ-आधुनिक हिन्दी जैन पद्य-साहित्य-गद्य की विविध विधाएं-कृति परिचय।	

चतुर्थ अध्याय : 'आधुनिक हिन्दी जैन काव्य : विवेचन' 145-256

महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं मुक्तक के प्रमुख तत्त्व व अंतर-उपलब्ध महाकाव्य की कथा-वस्तु, चरित्र-चित्रण रस, प्रकृति-चित्रण, दार्शनिकता व सर्गबद्धता-उपलब्ध खण्ड काव्यों का विषय वस्तु-विवेचन-मुक्तक रचनाओं का विषय-वस्तु परक विवेचन-निष्कर्ष।

पञ्चम अध्याय : 'आधुनिक हिन्दी-जैन-गद्य साहित्य : विधाएँ और विषय-वस्तु 257-395

पद्य व गद्य का आधुनिक युग में प्रभाव-गद्य का प्रसार-हिन्दी जैन गद्य साहित्य की विभिन्न विधाएं-उपन्यास और कथा का अन्तर, प्रमुख तत्त्व व प्रमुख रचनाओं का विवेचन, नाटक साहित्य, निबन्ध-साहित्य, जीवनी- आत्मकथा व संस्मरण-रचनाओं का विवेचन निष्कर्ष।

षष्ठम अध्याय : 'आधुनिक हिन्दी-जैन-काव्य का कला-सौष्ठव 396-440

पद्य-साहित्य के अन्तर्बाह्य तत्त्व में बाह्य तत्त्व रूप कला पक्ष-के प्रमुख तत्त्वों का विवेचन-भाषा, अलंकार, छन्द आदि के परिप्रेक्ष्य में-उपलब्ध काव्य-साहित्य की भाषा अलंकार, छन्द आदि का स्वरूप।

सप्तम अध्याय : 'आधुनिक हिन्दी-जैन-गद्य-साहित्य का शिल्प-विधान' 441-516

गद्य की चुस्तता के लिए आवश्यक तत्त्व-उपन्यास, कहानी, नाटक-साहित्य संवाद, भाषा-शैली, वातावरण, उद्देश्य, निबन्ध-जीवनी, आत्म-कथा आदि विधाओं की रचनाओं का भाषा-शैली विषयक विवेचन-निष्कर्ष।

उपसंहार 517-523

आधुनिक हिन्दी-जैन-साहित्य की उपलब्धियां, सीमाएं, आधुनिक युग के सन्दर्भ में इस साहित्य का महत्त्व एवं 1970 के बाद जैन-साहित्य की परिस्थिति।

परिशिष्ठ–(क) सन्दर्भ और आधार ग्रन्थों की सूची 524-531

परिशिष्ठ–(ख) इंगलिश, संस्कृत और गुजराती -संदर्भ ग्रन्थ 532-533

परिशिष्ठ–(ग) पत्र-पत्रिकाएं 534